

नारियल का महत्व



नारियल का महत्व

लेखक : ठाकुर भिम सिंह
मेलबोन ओस्ट्रेलिया



नारियल का महत्व

हमारे सनातन धर्म के अंतरगत नारियल के बहुत से महत्वपूर्ण बातें बताई गयी हैं ।
जैसे :-

१. पानो से भरा हुआ फल । (नारि अर्थात् नारा या मोहड़ी जिस में पानी होता है) ।

२. यह फल बहुत ही सक्त किसम का होता है जोकि समुन्द्र के तट पर भी होते हुये और खारा पानी हो सींचते हुये भी अपने अन्दर के पानी को खारा नहीं होने देता है । पक जाने के बाद तो यह फल हजारो मील समुन्द्र में तैर कर और महीनो पश्चात भी खराब नहीं होता । इन सब हलातों को सहन करने के बाद भी वह दूसरे द्वीप में पहुँच कर वृक्ष के रूप में उग जाता है ।

३. नारियल के ऊपरी भाग (हस्क) को अहंकार का प्रतीक मान कर उसे पूजा करने से पहले निकाल दिया जाता है । जैसे इनसान अपने बाल को मुड़वा कर केवल सिखा ही बचा लेता है, उसी तरह नारियल को छिल कर उस के सिखे को बचा लिया जाता है ।

इस को फिर गद्दा, मजना आदि बनाने के काम में भी लाया जाता है ।

४. छिलने के बाद इस का जो शेल (खोपड़ाई) है वह मनुष्य के मुण्ड की तरह देखने में नजर आता है । तीन आँख भगवान शिवजी के त्रिनेत्र से तुलना की जाती है । इसलिये जब कभी उसे कलश पर स्थापित करो तो तीसरी आँख को सामने की ओर मत रखो । खोपड़ाई का कड़कपन यह भी संकेत करता है कि बाहर से वह जितना भी सक्त दीख पड़ता है उतने ही सावधानी से वह अपने अन्दर के भाग को सुरक्षित रखता है । यह फिर जितने ही कठोर वह बाहर से प्रतीत होता है, उतने ही कोमल वह अन्दर से है । अर्थात् उस का मीठा पानी और उस का स्वादिष्ठ गरी ।

५. हिन्दुओं के समस्त पूजा आदि में तो नारियल का परियोग होता ही है क्योंकि इसे सब फलों से उत्तम माना गया है । बिना कलश के पूजा नहीं होती और कलश, बिना नारियल के नहीं होता । इसीलिये भगवान के सब से प्यारा फल का नाम के आगे श्री लगाया गया है और नारियल को श्रीफल के नाम से समबोधन किया जाता है ।

६. हवन यज्ञ के पूर्ण अहृति में नारियल का होना हर प्रकार से खुशल, मंगल और परिपूर्ण होता है ।

नारियल का महत्व

७. हिन्दू समाज के लोगों के लिये तो हर एक मांगलिक कार्यों में नारियल का प्रयोग किया जाता है जैसे नये घर का निर्माण, नय मोटर, विवाह संस्कार आदि ।

८. संसारिक कामनाओं और इच्छायों की पूर्ति हेतु नारियल का बली सर्व मंगल होता है ।

९. शास्त्रों में नारियल को सृष्टि के रचइता परमपिता ब्रह्मा का सिर बताया गया है । वृक्षों में भी यह सब से प्रथम वृक्ष माना जाता है ।

१०. पूर्वकाल में मनुष्यों और पशुओं का बली दिया जाता था । धीरे धीरे धर्म के मार्ग में राजसी और तामस्क स्वभाव तथा हिंसा बृति म बदलाव आया और धर्म के प्रचार में सातव्किता और अहिंसा ने अपने कदम आगे बढ़ायें । तभी से निर्अपराध जीवों के स्थान पर नारियल का बली केवल पूर्णता ही नहीं बलिक श्रेष्ठ माना गया । उसी समय से नारियल को श्रीफल का नाम पड़ा ।

११. नारियल त्याग और बलिदान का प्रतीक है । इस के पेड़ के हर एक भाग को ना जाने कितने काम में लाये जाते हैं जैसे- पत्तियों से चटाई, घर का छत, टोपी या पगड़ी और झाड़ू । फल से कटोरी, पानी, गरी, तेल, बहुत से आयुर्वेदिक दवाइयाँ, क्रीम, दाँत धोने का पड़ष्ट, नहाने वाला साबुन, किसम किसम के पकवान आदि ।

नारियल के पानी से तो रोगियों के लिये अनगिनित दवाइयाँ बनाई जाती हैं । उस के लम्बे धड़ को तो कितने लोग पुल बनाने के काम में भी लाते हैं । बीते दिनों में हमने भी पुल के काम में इसे लाया था । साथ साथ यह घर के खूँटे के और जलाने के काम में भी आता है । हस्क से रस्सी, तकिया, गद्दा, मजना आदि ।

१२. नारियल को सब से पवित्र और उत्तम् मान कर हिन्दू समाज के लोग अच्छे सकुन मान कर अपने दान के पात्र में रख कर देते हैं । यह क्यों न हो, इसीलिये तो यह श्रीफल कहा जाता है ।

१३. नारियल के वृक्ष में न जाने कितने और जिव जनतुओं का निवास स्थान रहता है, जैसे बररे, मधुमक्खी, बीटल, चीऊँटी आदि ।

१४. नारियल का परियोग हिन्दू समाज के सारे मनदिरों में सब देवताओं के लिये किया जाता है । इसे हर एक मांगलिक कार्यों में लाया जाता है जैसे -

नारियल का महत्व

सोलाह संस्कारों में, पूजा अनुष्ठान में, नये घर, मकान, दुकान, मोटर, जमीन, पाठशाला, आदि के निर्माण में। भगवान के प्रशाद में तो यह सब से उत्तम माना गया है।

१५. संसार में नारियल के समान कोई दूसरा वृक्ष अथवा फल नहीं है। नारियल से हमें यह शिक्षा मिलती है कि :-

१. जिस तरह मेरा पेड़ अति लम्बा होता है उसी तरह तुम भी चाहे कितने शक्तिशाली, लम्बे आकारवाले यह बड़े हो जाओ यह फिर धनवान हो जाओ पर अपने मनुष्य योनि के कर्तव्यों को कभी मत भूलना।
२. जैसे मैं समुद्र के किनारे रह कर भी तुम्हें अपने फल से मीठे जल देता हूँ, वैसे तुम भी चाहे कितने बुरे विचार वाले लोगो के बीच में रहो पर कभी भी अपने मनुष्य धर्म से विचलित मत होना अर्थात् राक्षस मत बन जाना वलिक प्रेमी और सज्जन इनसान बनना।
३. मेरा खोपड़ाई आप के सिर के ऊपरी भाग की तरह धैरवान और सक्त है पर उस के अन्दर मेरा गरी अतियन्त निर्मल और स्वच्छ है। उसी तरह तुम भी अपने बुद्धि को विवेक तथा धैरवान बनाओ। अपने जीवन को सतकर्मा बनाओ और शीतलता, कोमलता तथा प्रेमादि से सबों के संग पेश आओ। परउपकारी बनो।
४. मैं तो जड़ योनि हूँ फिर भी जैसे मैं अपने हर एक अंजों को तुम्हारे लिये अर्पण कर देता हूँ, वैसे तुम (जो कि कर्म योनि हो), अपने जीवन को दूसरों के लिये अर्पित कर दो, नहीं तो फिर तुम्हें यह एक ही कर्म योनि में आने से क्या परियोजन ?

' सम्पूर्ण '

ॐ

